ISSN : 2349-4905
अंक-27, जनवरी-जून, 2023

हिमांजलि

हिन्दी माध्यम में उच्च स्तरीय अनुसन्धान के लिए
समर्पित भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
शिमला की अर्धवार्षिक पत्रिका

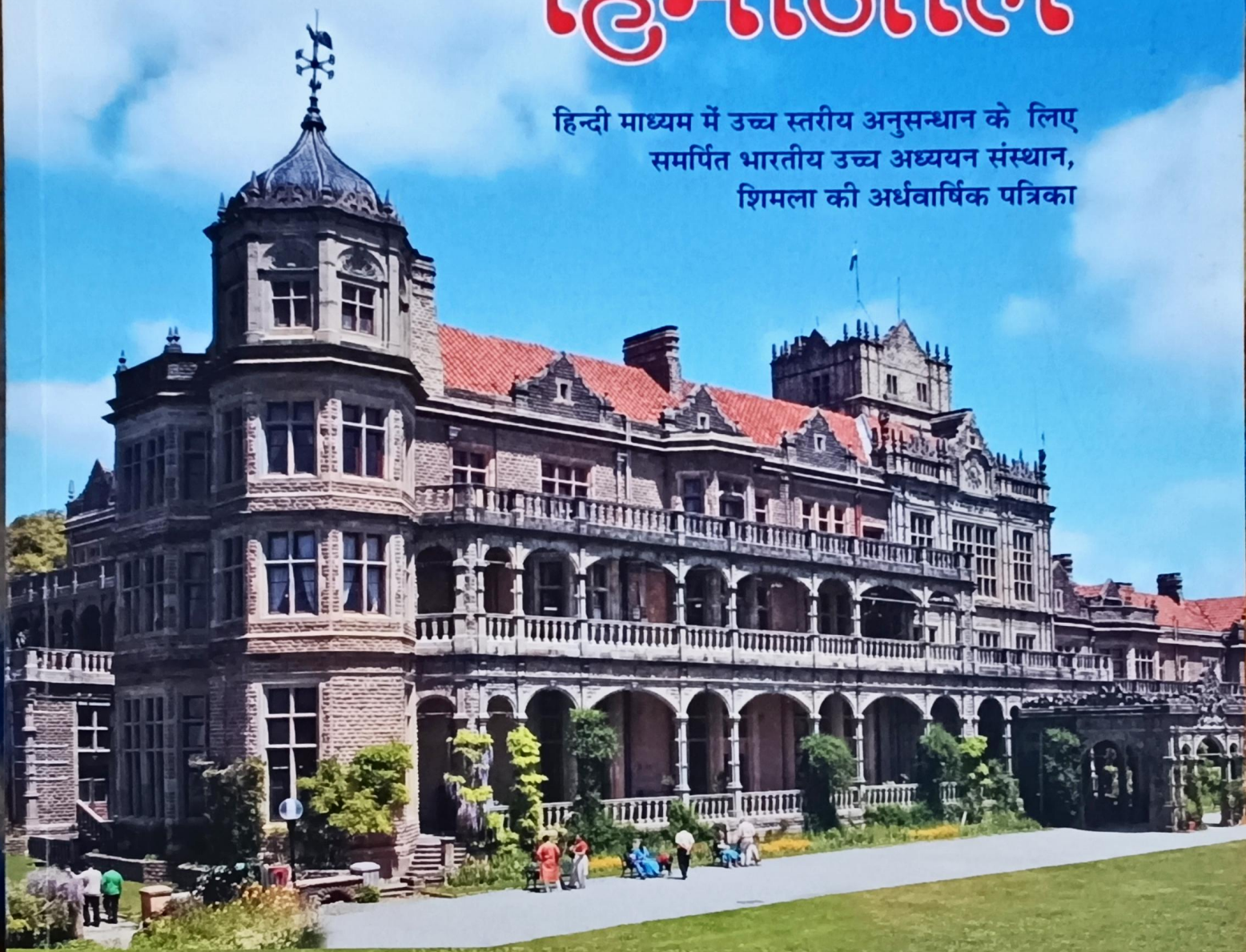

प्रधान सम्पादक
नागेश्वर राव

सम्पादक
राजेन्द्र बड़गूजर

अनुक्रम

पुरोवाक् — नागेश्वर राव, निदेशक — 5

संपादकीय — राजेन्द्र बड़गूजर — 6

आलेख

1. **ईशान भारत : संवाद का बदलता स्वरूप**
   चंदन कुमार — 7
2. **मिथकीय आईने में अंधायुग**
   रमेश प्रताप सिंह — 10
3. **समकालीन कविता में नैतिकता के प्रश्न : बदलते संदर्भ और सरोकार**
   बृजेश कुमार पाण्डेय — 15
4. **प्रेमचंद के कथा-साहित्य में मानवाधिकार**
   जय कौशल — 20
5. **राजीव त्रिगर्ती : जीवट संघर्ष और प्रेम के कवि**
   चंद्रकांत सिंह — 23
6. **गाँधी दर्शन और भारतीय कविता**
   विजय कुमार प्रधान — 28
7. **समकालीन स्त्री-उपन्यास लेखन में नारी-अस्मिता**
   सृष्टि कुमारी — 31
8. **हिन्दी उपन्यास और सामाजिक न्याय**
   महात्मा पाण्डेय — 35
9. **भारत में लैंगिक न्याय तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका**
   शिप्रा सिंह, सुनील महावर — 40
10. **मंगलेश डबराल का काव्य : युद्ध विरोधी स्वर**
    ममता कुमारी — 46
11. **भारत में जेंडर आधारित हिंसा की स्थिति**
    सुप्रिया पाठक — 49
12. **विश्व छापाकला की बदलती प्रकृति पर अध्ययन**
    सचिन रामराव हजारे — 53
13. **बचपन की चौखट पर मानवता को संरक्षण प्रदान करती कविताएँ**
    प्रतिभा द्विवेदी — 59
14. **छायावाद : भाषा पर्व**
    कृष्ण बिहारी पाठक — 63

धरोहर

1. **जनसंचार की बुनियाद हैं आदिवासी गीत**
   रूपचंद गौतम — 68
2. **लुप्त होती भाषाएँ : कारण एवं संवर्धन की आवश्यकता 'तुरी'**
   प्रेमीलीना उरांव अभय सागर मिंज — 73
3. **नर्मद के निबंधों में धार्मिक एवं सामाजिक सुधार**
   आलोक गुप्त — 76
4. **कालिदास के नाटकों में विदूषक**
   कृष्ण मोहन — 80
5. **मध्यकालीन भारतीय साहित्य का वायनरी संदर्भ**
   राम बिनोद रे — 84

सिनेमा

1. **मेरा कुछ सामान तुम्हारे पास पड़ा है : इजाजत (1987)**
   रश्मि सिंह — 88

लोक-कला-संस्कृति-धर्म

1. **भारतीय संस्कृति में निहित पर्यावरण संरक्षण संबंधी उपाय**
   पवन कुमार — 91

राजीव त्रिगर्ती : जीवट संघर्ष और प्रेम के कवि

चंद्रकांत सिंह *

राजीव त्रिगर्ती समकालीन हिंदी काव्य-धारा के प्रखर हस्ताक्षर हैं। विराट युगीन बोध के साथ कवि ने एक-एक क्षण को जिया है, यही कारण है कि कविता महज काव्य-कौशल भर नहीं लगती बल्कि हिमाचल के विविध दृश्यों एवं घटनाओं की सुन्दर कलाकारी जान पड़ती है। 'नदी की लोरियाँ' नामक कविता में कवि ने पहाड़ी नदी को लोरियाँ सुनाते हुए चित्रित किया है। चूँकि कवि का व्यक्तिगत जीवन ताउम्र राग-रंग एवं संघर्ष के बीच निर्मित हुआ, यही कारण है कि कविताओं में भी प्रकृति के उत्सव की मार्मिक कथा अभिव्यक्त हुई है। पहाड़ी नदी कवि के श्लथ शरीर की थकन को दूर कर स्फूर्ति और चेतना का संचरण करती है। कवि ने शुभ्र नदी को मुक्तिदायिनी चेतना के रूप में चित्रित किया है जो जीवन को विश्रांति से भर देती है -

चाँदनी रात में
एक पहाड़ी नदी का रूप
मानो उतर आई हो प्रकृति
नदी का रूप धरकर
उसके कलकल को कानों में
कर्णफूल-सा लटका लेना
सच में अलौकिक है
वैसे नींद तुम्हारी अपनी है
पर छोड़ देती है साथ
तब काम आती है
पर्वतों, घने जंगलों में
उछलती-कूदती, गाती-मचलती नदी
चाँदनी के लिबास में लिपटी
चली आती है थपकियाँ देने
उसके गीतों के कलकलाते बोल
बन जाते हैं लोरियाँ।[1]

'कविता हवा में नहीं होती' शीर्षक कविता में राजीव त्रिगर्ती ने समकालीन समय की चीख, हत्या एवं क्रूरतम यथार्थ को व्यक्त किया है। उनको पूरा विश्वास है कि कविता युगीन स्वरूप को बदलेगी और बेहतर समय को चित्रित करेगी। हिंसा, साजिशों एवं अपराध की सलवटों को खोलती हुई कविता यकीनन एक बेहतर समाज का निर्माण करने में सक्षम होगी जिससे मानव-जीवन सुखकर हो सकेगा -

कविता उदास है
क्योंकि हवा में उदासी है दूर तक
कविता से आ रही है खून की बू
क्योंकि हवा में काबिज है खून की गंध
कविता में आग है क्योंकि
हवा में चारों तरफ फैला है दमघोटू धुआँ
कविता तड़प रही है क्योंकि
हवा में गूँज रही हैं सिसकारियाँ
कविता में उतर आई है कालिख
क्योंकि हवा काली हो चुकी है चारों तरफ की
कविता बदल रही है
क्योंकि बदल रही है हवा।[2]

राजीव त्रिगर्ती के लिए कविता का आना बड़ी बात है। कविता पर पूर्ण विश्वास लिए हुए, रचना-शक्ति के द्वारा परिवर्तन की बड़ी अपेक्षा के साथ कवि राजीव त्रिगर्ती का आगमन होता है। कविता के आने की तुलना वह परागकणों से करते हैं जिनके साथ प्रकृति में सुगंध एवं सौंदर्य के अपूर्व जगत का निर्माण होता है। इस बोझिल एवं थकी हुई दुनिया को गति एवं संतुलन प्रदान करने के लिए कवि ने कविता के निर्माण को सबसे अधिक प्रभावकारी माना है। कविता के आने की बात करते हुए कवि लिखते हैं -

कविता आती है कुछ इस तरह
जिस तरह पहुँचते हैं पराग के कण
एक फूल से दूसरे फूल तक
कविता आती है इस तरह
जिस तरह बनते हैं बादल
उठते हैं ऊपर की ओर
अनायास टपकती हैं बूँदें
और समूची धरा का
बदल जाता है रंग-रूप।[3]

आज जब कविता के नाम पर शब्द-चातुर्य एवं वाग्जाल अधिक हैं, ऐसे में राजीव त्रिगर्ती की कविताएँ भोले मन की कविताएँ हैं, उस पहाड़ी युवक के अन्तस की कविताएँ हैं जिसे तामझाम एवं उलझाव में जीना नहीं आता, जो सादगी से अपने

* आचार्य, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धौलाधार परिसर-एक, जिला-काँगड़ा, धर्मशाला-176215